साक्षात्कार

(डॉ० प्रतिभा अग्रवाल के साथ एक बातचीत)

प्रश्न : आपने श्यामानंद जालान जी के साथ एक लम्बे समय तक कार्य किया है। आपकी दृष्टि में अभिनेता जालान तथा निर्देशक जालान में से कौन अधिक प्रभावी रहा तथा उसके कारण क्या कारण रहे?

उत्तर : श्यामानंद स्वयं को पहले निर्देशक मानते थे। मैं अभी भी इस विषय में अधिक स्पष्ट नहीं हूँ तथा मेरी दृष्टि में वे जितने बड़े निर्देशक थे, उससे बड़े अभिनेता थे। शायद इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि उन्होंने स्वयं को कभी देखा नहीं कि वह अभिनय कितना प्रभावपूर्ण हो सकता था, होता था। इसका दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि बतौर निर्देशक उन्हें ज्यादा अच्छा लगता रहा।

प्रश्न : 'अनामिका' संस्था की स्थापना तथा श्यामानंद जालान के निर्देशन तथा अभिनय में क्या रिश्ता रहा है?

उत्तर : 'अनामिका' की स्थापना दिसम्बर, 1955 में हुई, उसकी स्थापना करने वाले व्यक्तियों में श्यामानंद थे, हम थे तथा कई अन्य मित्र लोग थे। पहला नाटक हम लोगों ने किया था आर०जी० आनंद का – 'हम हिंदुस्तानी हैं"। श्यामानंद ने इसे डायरेक्ट किया था, अभिनय नहीं किया। इसके बाद उन्होंने किया था – हेनरिक इब्सन का 'जनता का शत्रु"। उसमें हमने और उन्होंने अभिनय भी किया, उसमे वे डॉ० स्टॉकमैन की भूमिका में थे और हम उनकी पत्नी की भूमिका में थे। बाद में फिर 'नए हाथ' नाटक का प्रदर्शन जालान ने किया।

प्रश्न : मोहन राकेश के नाटकों के विषय में आपका क्या मत है?

उत्तर : मोहन राकेश ने मुख्यतः चार नाटक लिखे, जिनमें – 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस', 'आधे अधूरे' तथा 'पैरों तले की जमीन' जोकि अपूर्ण रह गया था तथा जिसे बाद में कमलेश्वर ने पूरा किया। पहले तीनों नाटकों को श्यामानंद ने निर्देशित किया तथा पहले और दूसरे यानि 'आषाढ़ का एक दिन' और 'लहरों के राजहंस' में अभिनय भी किया था।

प्रश्न : 'आषाढ़ का एक दिन' के कथ्य के विषय में आपके क्या विचार हैं ?

उत्तर : राकेश के नाटकों में सबसे स्वाभाविक नाटक था – 'आषाढ़ का एक दिन'। इस नाटक में एक कल्पनाशील युवा लड़की के प्रेम को मोहन राकेश ने दर्शाया है।

कालिदास जैसे व्यक्ति से वह प्रेम करती है और किस हद तक वह जाती है, सुख पाती है या दुःख पाती है, क्या-क्या झेलती है; यही इस नाटक में लेखक ने दिखाया है। हम समझते हैं कि भावनात्मक स्तर पर जिस समर्पण की प्रवृति एक युवा लड़की में या जो हमारे भारतीय संस्कार में है, उसकी अभिव्यक्ति करने वाला नाटक है – 'अशाध का एक दिन'। यह कथा पारिवारिक कथा थी, जिसे दूसरे अंक में राकेश ने बहुत बड़ा परिप्रेक्ष्य दिया। राजकीय सुविधाओं के भोग का क्या प्रभाव पड़ता है, शासन किस तरह कार्य करता है, लोग कैसे उसकी चपेट में आ जाते हैं – इन सभी तथ्यों को राकेश ने स्पष्ट किया है।

प्रश्न : 'अनामिका' द्वारा प्रदर्शित 'आषाढ़ का एक दिन' में जालान क्या-क्या मौलिक परिवर्तन किये? वे प्रदर्शन कहाँ तक सफल सिद्ध हुए?

उत्तर : इस नाटक में उन्होंने न तो पात्रों से कोई अस्वाभाविक आचरण करवाया, न कोई मूवमेंट ऐसे दिए, न सेट-सेटिंग में ऐसे प्रयोग किये जो पूर्णतः नवीन हो। उन्होंने बस यही किया कि जो नाटककार कह रहा है, उसे कितनी सघनता के साथ, कितनी गहराई तथा इमानदारी के प्रस्तुत किया जा सकता है? तो यह थे 'आषाढ़' के निर्देशक जालान। इस नाटक में उन्होंने कालिदास की भूमिका में अभिनय भी किया।

प्रश्न : कालिदास के चरित्र में श्यामानंद जालान का अभिनय कैसा रहा? लेखन ने नाटक में जिस कालिदास नामक चरित्र का सृजन किया, जालान उस भूमिका के अभिनय में कहाँ तक सफल हुए ?

उत्तर : मुझे लगता है कि यह रोल उन्हें सूट नहीं किया, इस भूमिका के लिए भावुकता होना अनिवार्य है ; यद्यपि जालान जीवन में प्रैक्टिकल आदमी थे। इसका कारण यह है कि पेशे से वकील थे, हर बात को तर्क देकर समझने-समझाने का प्रयास करते थे। मगर फिर भी, मन के भीतर गहरे जाकर छूने की क्षमता उनमें थी।

प्रश्न : राकेश ने कालिदास का चरित्र किस तरह का लिखा है?क्या वह एक नायक की भांति व्यव्हार करता है? इस पर आपके क्या विचार हैं?

उत्तर : राकेश ने कालिदास का जो कैरेक्टर लिखा है, हम स्पष्ट कहें तो यह पिटा हुआ कैरेक्टर है। कालिदास जिन्होंने रचनाएं कीं, बहुत महान थे इसमें कोई शक नहीं है। शुरू से ही यदि हम देकहें तो अम्बिका जिस तरह से कालिदास को लताड़ती है, उसकी आलोचना करती है,उसके विरुद्ध बात करती है, कालिदास का चरित्र खड़ा ही नहीं रह पाता और फिर वह प्रलोभन में आकर चला जाता है। जो कुछ रहा-सहा

बचता है, वह तीसरे अंक में आकर समाप्त हो जाता है जब लड़की का रोना सोचकर कालिदास विचलित होकर चला जाता है। राकेश ने कालिदास का जो चरित्र रचा है, वह एक दुर्बल व्यक्ति है।

प्रश्न : 'लहरों के राजहंस' नाटक के कथ्य को लेकर आपके क्या विचार हैं?यह किस तरह का नाटक है?

उत्तर : 'लहरों के राजहंस' में वास्तव में एक अलग तरह की परिस्थिति है, साफ़ लग रहा है कि व्यक्तिगत अस्मिता का सवाल, ईगो का सवाल, अस्तित्व का सवाल राकेश की आँखों के सामने था तथा इन चरित्रों के माध्यम से उन्होंने व्यक्त किया। अंतिम अंक में आकर उसमें सारी बातें एकदम अलग लेवल पर चली जाती थीं।

प्रश्न : 'लहरों के राजहंस' के प्रदर्शन के समय लेखक द्वारा नाटक में संशोधन किया गया। आपके विचार में, नाटक के कितने संशोधित संस्करण आ गये हैं? उनमें क्या अंतर है?

उत्तर : राकेश द्वारा किये गये संशोधित रूप का मंचन श्यामानंद ने किया परन्तु उसमें यह समस्या रह जाती है कि पात्र मानों यदि एक तल्ले पर खड़े हैं, सातवें तल्ले पर पहुँच जा रहे हैं। वह जो सौन्दर्यनन्द का समय और आधुनिक युग का जो अंतर है, वह और किसी चरित्र में इतना नहीं दिखता; जितना सुंदरी में दिखता है। उसके मुख से इतनी सारी बातें आधुनिक लगी हैं। प्रथम सस्करण में सुंदरी में इतना तीखापन नहीं था। पहले संस्करण में नन्द घर छोड़ कर जाता है या नहीं, यह स्पष्ट नहीं होता। दूसरे संस्करण में वह घर छोड़ कर चला जाता है। अनामिका द्वारा जो नाटक का जो संस्करण प्रस्तुत किया गया, वह छपा नहीं है तथा उसके बाद जो संस्करण आया वह भिन्न था। हमारे पास तीन संस्करण हैं और तीनों अलग-अलग हैं, जिनमें एक संस्करण निश्चित रूप से राकेश की मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ। प्रश्न यह है कि जो परिवर्तन हुआ, वह किसने किया, यह स्पष्ट नहीं है। श्यामानंद ने 42 वर्षों बाद 2008 में यह नाटक फिर से किया था। यह प्रोडक्शन अलग था, पात्रों को भी अलग तरह से श्यामानंद ने प्रदर्शित किया था। यह प्रदर्शन प्रभावशाली रहा।

प्रश्न : 'आधे अधूरे' का प्रदर्शन जालान ने 'अनामिका' तथा 'पदातिक' दोनों के लिए किया। दोनों प्रदर्शनों में क्या अंतर आया?

उत्तर : 'आधे अधूरे' भी श्यामानंद ने दो बार किया। पहली बार किया सन् 70-71 में, उसमें उन्होंने निर्देशन किया, अभिनय नहीं किया और दूसरी बार 'पदातिक' के

लिए किया तथा उसमें अभिनय भी स्वयं किया। दोनों प्रदर्शनों में, हमारे यहाँ एक ही व्यक्ति ने पांचों रोल किये। वे स्वयं अभिनेता भी थे, कृष्णकुमार का अभिनय उनकी दृष्टि में, उनकी कपना के अनुरूप नहीं बन पाया। मुझे ऐसा लगा कि पहले वाला प्रदर्शन लेखक के कथ्य के ज्यादा निकट था। पिछले दिनों, कुछ चबा-चबाकर बोलने की बात, अभिनय में अतिरिक्तता या कृत्रिमता, आदि देखने को मिलती है। बाद में जो प्रोडक्शन दोबारा किये, वे हमें उतने अच्छे नहीं लगे। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि पुराना प्रदर्शन हम लोगों ने देखा, वही दिमाग में छाया हो सकता है, परन्तु 'लहरों के राजहंस' में तो ऐसा नहीं था। 'आधे अधूरे' में एटिट्यूट में बड़ा परिवर्तन किया गया। इस प्रदर्शन से उन्हें बहुत संतोष मिला था, दर्शकों को हो या नहीं।